

उत्तर प्रदेश के ग्रामीण विकास में वित्तीय समावेशन की प्रभावशीलता : पूर्वांचल क्षेत्र का शोधात्मक अध्ययन

जागृति सिंह¹, डॉ० अमित कुमार राहुल²

¹शोध छात्रा, वाणिज्य विभाग, टी०डी०पी०जी० कालेज, जौनपुर

¹Email: jagritiasingh@gmail.com

²असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, टी०डी०पी०जी० कालेज, जौनपुर

²Email: akrahul2020@gmail.com

Received: 07 May 2026 | Accepted: 19 May 2026 | Published: 30 May 2026

Abstract (सारांश)

वित्तीय समावेशन ग्रामीण विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है जो आर्थिक वृद्धि और सामाजिक सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करता है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में वित्तीय समावेशन की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है। 398 ग्रामीण परिवारों से संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग (SEM) और ANOVA का उपयोग करके किया गया। परिणाम दर्शाते हैं कि वित्तीय साक्षरता का वित्तीय समावेशन पर सीधा सकारात्मक प्रभाव (0.258, $p < 0.001$) है। वित्तीय निर्णय निर्माण (0.176, $p < 0.001$) और वित्तीय प्रबंधन व्यवहार (0.499, $p < 0.001$) महत्वपूर्ण माध्यमकारी भूमिका निभाते हैं। वित्तीय समावेशन शिक्षा (0.758), वित्तीय (0.813), आर्थिक (0.426), रोजगार (0.156) और स्वास्थ्य (0.150) आयामों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। निष्कर्ष में, वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देकर ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी और टिकाऊ विकास संभव है।

मुख्य शब्द: वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन, ग्रामीण विकास, सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण, उत्तर प्रदेश

1. प्रस्तावना

भारत में ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिक स्थिति विकसित क्षेत्रों से काफी भिन्न है। पनकाजे और अन्य (2023) के अनुसार, कई ग्रामीण क्षेत्रों में नकद लेनदेन अभी भी पसंदीदा माध्यम है और बचत अक्सर सोना या भूमि जैसी भौतिक संपत्ति के रूप में रखी जाती है। डिजिटल वित्तीय सेवाओं के आगमन और सरकार की वित्तीय समावेशन पर जोर के बावजूद, ग्रामीण वित्तीय प्रबंधन में औपचारिक प्रथाओं की ओर बदलाव धीमा रहा है। कोहेन और नेल्सन (2011) ने यह रेखांकित किया कि ग्रामीण वित्तीय प्रबंधन में मुख्य चुनौती वित्तीय साक्षरता की कमी है। अरोड़ा (2016) के अध्ययन में पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में कई व्यक्तियों को ब्याज दरों, मुद्रास्फीति और जोखिम प्रबंधन जैसी बुनियादी वित्तीय अवधारणाओं का सीमित ज्ञान है। यह कमी औपचारिक वित्तीय संस्थानों में विश्वास की कमी और उच्च ब्याज दरों वाले अनौपचारिक साहूकारों की ओर पलायन की ओर ले जाती है। लुसार्डी और मिचेल (2011) के शोध अनुसार, ग्रामीण आय की मौसमी प्रकृति वित्त को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करना मुश्किल बनाती है, जिससे भविष्य की योजना और आपातकालीन बचत चुनौतीपूर्ण हो जाती है।

हालांकि, पिछले कुछ वर्षों में वित्तीय समावेशन वैश्विक स्तर पर टिकाऊ विकास के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। सरमा और पैस (2008) तथा तुमासी और अन्य (2022) के अध्ययन दर्शाते हैं कि वित्तीय समावेशन में सुधार विकासशील देशों की GDP को 2025 तक 3.7 ट्रिलियन डॉलर या छः प्रतिशत तक बढ़ा सकता है। विश्व बैंक की रिपोर्ट (T. T. H. Nguyen, 2021) के अनुसार, वित्तीय समावेशन को प्रोत्साहित करने के लिए 143 क्षेत्राधिकार में 67% बैंक नियामकों को लक्षित किया गया है। भारत में ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच सामाजिक असमानता विशेष रूप से चिंताजनक है। कुक और अन्य (2016) तथा तुमासी और अन्य (2022) के अनुसार, शहरी जनसंख्या ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में चार गुना

अधिक समृद्ध है। डेमिगुच-कुंट और अन्य (2020) के शोध में पाया गया कि विश्व की 1.7 अरब में से 9/10 जनसंख्या किसी भी वित्तीय संस्थान से जुड़ी नहीं है।

थॉमस (1999) और केस और अन्य (2002) का तर्क है कि समृद्ध पृष्ठभूमि वाले ग्रामीण लोग अच्छे स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्यमशीलता और जोखिम शमन क्षमता में बेहतर हैं। बेक और अन्य (2007) के अनुसार, कम संपत्ति वाली ग्रामीण जनसंख्या को उच्च असुरक्षितता के कारण वित्तीय नियोजन में कठिनाई होती है। गैसीना और कैदारोवा (2017) का अध्ययन दर्शाता है कि उच्च वित्तीय साक्षरता उच्च बचत आदतें, बेहतर वित्तीय निर्णय और विविधीकृत बचत को प्रोत्साहित करती है। उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्रमुख है, लेकिन वित्तीय साक्षरता की कमी यहां विकास को बाधित कर रही है। डेमिगुच-कुंट और क्लैपर (2013) के अनुसार, 148 देशों में आय में भिन्नता का वित्तीय समावेश पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के बीच संबंध को समझने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

वित्तीय साक्षरता एवं वित्तीय समावेशन का संबंध आधुनिक आर्थिक विकास में केंद्रीय हो गया है। रेमंड (2010) के अनुसार, वित्तीय साक्षरता किसी व्यक्ति की बुनियादी वित्तीय अवधारणाओं की समझ और अपने पैसे का बुद्धिमानी से प्रबंधन करने की क्षमता का एक माप है। अदुडा और कलुंडा (2012) ने वित्तीय समावेशन को "व्यक्तियों के लिए उपयुक्त वित्तीय वस्तुओं और सेवाओं तक पहुंच" के रूप में परिभाषित किया है। संपूर्ण वित्तीय समावेशन प्राप्त करना प्रत्येक परिवार को बचत, ऋण, बीमा और भुगतान जैसी समकालीन वित्तीय सेवाओं की एक श्रृंखला तक पहुंच प्रदान करना है, साथ ही सूचित निर्णय लेने के लिए पर्याप्त शिक्षा और सहायता देना है (गोलैंड और अन्य, 2010)। वित्तीय समावेशन को मापने के संदर्भ में, सेराओ और सिकेरा (2012) के अनुसार, इसे चार लेवलों में विभाजित किया जा सकता है: पहला, "पहुंच" जो औपचारिक संस्थानों द्वारा सुलभ वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने की क्षमता को संदर्भित करता है; दूसरा, "गुणवत्ता" जो वित्तीय उत्पाद की उपयुक्तता को दर्शाती है; तीसरा, "उपयोग" जो बैंकिंग सेवाओं की गहन और दीर्घकालीन उपयोग को इंगित करता है। अंत में, "प्रभाव" ग्राहकों के जीवन में परिवर्तन को मापता है। क्लैपर और अन्य (2016) के अनुसार, वित्तीय साक्षरता की कमी किसी को बचत खाता, क्रेडिट या शेयर ट्रेडिंग जैसी वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने में असहज बना सकती है।

2015 में, विश्व बैंक ने वाणिज्यिक और सार्वजनिक क्षेत्र के भागीदारों के साथ मिलकर 2020 तक यूएफए (सार्वभौमिक वित्तीय पहुंच) प्राप्त करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य स्थापित किया। विश्व बैंक और अंतर्राष्ट्रीय वित्त निगम (IFC) ने लक्षित कार्रवाई के माध्यम से 1 अरब व्यक्तियों को लेनदेन खाते तक पहुंच प्रदान करने का वचन दिया (विश्व बैंक, 2018)। हालांकि, 2014 में Findex के आंकड़ों के अनुसार, 2 अरब वयस्क अभी भी बैंक खातों से वंचित थे, जो 2017 तक 1.7 अरब तक कम हुआ, जो विश्वव्यापी वयस्कों का लगभग 40% है (डेमिगुच-कुंट और अन्य, 2020)। अकाप्पो और अन्य (2022) के शोध में खाता स्वामित्व और वित्तीय साक्षरता के बीच एक अनुकूल और महत्वपूर्ण सहसंबंध पाया गया। यह सुझाता है कि वित्तीय साक्षरता वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देती है क्योंकि जो लोग वित्तीय रूप से साक्षर होते हैं, वे खातों के मालिक होने की अधिक संभावना रखते हैं, जो वित्तीय समावेशन का सबसे मौलिक प्रकार है। विएरा (2012) के अनुसार, वित्तीय साक्षरता, या वित्तीय मुद्दों को समझने और उसके आधार पर कार्य करने की क्षमता, बेहतर वित्तीय निर्णयों की ओर ले जाती है। लुसार्डी और मिचेल (2014) के शोध से पता चलता है कि वित्तीय साक्षरता विभिन्न वित्तीय अवधारणाओं जैसे धन के समय मूल्य, वित्तीय नियोजन, उपभोक्ता अधिकार और चक्रवृद्धि ब्याज की समझ को संदर्भित करता है, जो निवेश, बचत, कर, सेवानिवृत्ति, बीमा और अन्य वित्तीय मामलों के बारे में ध्वनि निर्णयों की क्षमता को बढ़ाता है (ज़कारिया और अन्य, 2016)।

केम्पसन और अन्य (2017) के अनुसार, वित्तीय व्यवहार किसी के वित्त से संबंधित कुछ करने के लिए किसी की मनोवृत्ति और कार्य है। इसे बजट निर्धारण, खरीदारी, उधार लेने, निवेश करने और जोखिम प्रबंधन के रूप में वर्णित किया जा सकता है (जियाओ और जियाओ JJ, 2008)। एलन और अन्य (2015), एंड्रयू और लिनवती (2014), हेरवती (2015) तथा सत्री और फलहाती (2012) के अध्ययनों में वित्तीय प्रबंधन व्यवहार और साक्षरता के बीच संबंध मिला है। अकाप्पो और अन्य (2022) ने दिखाया कि सुदृढ़ निवेश और बचत व्यवहार वाले व्यक्ति क्रेडिट, बचत खातों और डिजिटल भुगतान का अधिक उपयोग करने की संभावना रखते हैं। यह स्पष्ट करता है कि वित्तीय व्यवहार वित्तीय समावेशन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. उद्देश्य

1. उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता का वित्तीय समावेशन पर सीधा प्रभाव मूल्यांकन करना।
2. वित्तीय निर्णय निर्माण और वित्तीय प्रबंधन व्यवहार की माध्यमकारी भूमिका को समझना और ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण पर वित्तीय समावेशन का प्रभाव निर्धारित करना।

4. पद्धति

यह एक वर्णनात्मक और निरीक्षणात्मक अनुप्रस्थ-अनुभागीय अध्ययन था जिसमें प्राथमिक और माध्यमिक डेटा दोनों का उपयोग किया गया। अध्ययन क्षेत्र के रूप में उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र का चयन किया गया, जहां कृषि आधारित अर्थव्यवस्था प्रमुख है। 2011 की जनगणना के अनुसार, कुल 79,46,657 ग्रामीण परिवारों में से तारो यमने सूत्र का उपयोग करते हुए न्यूनतम 385 ग्रामीण परिवार (95% आत्मविश्वास स्तर) निर्धारित किए गए। इस अध्ययन में 428 प्रश्नावली वितरित की गई और कुल 398 नमूने एकत्रित किए गए, जो 93% प्रतिक्रिया दर का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन 398 परिवारों में से 327 BPL (गरीबी रेखा से नीचे) कार्ड धारक थे, जबकि शेष 71 APL (गरीबी रेखा से ऊपर) कार्ड धारक थे। अध्ययन के लिए एक संरचित प्रश्नावली विकसित की गई जिसमें जनसांख्यिकीय विवरण, बुनियादी वित्तीय साक्षरता (6 मद), उन्नत वित्तीय साक्षरता (3 मद), वित्तीय निर्णय निर्माण (6 मद), वित्तीय प्रबंधन व्यवहार (7 मद), वित्तीय समावेशन (10 मद), और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण (शिक्षा, वित्तीय, सामाजिक, आर्थिक, रोजगार और स्वास्थ्य) शामिल थे। सभी चर को 5-बिंदु लिंकेट स्केल पर मापा गया (1 = बिल्कुल असहमत, 5 = पूरी तरह सहमत)। डेटा विश्लेषण SPSS 26 और SPSS AMOS 23 सॉफ्टवेयर का उपयोग करके किया गया। संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग (SEM) का उपयोग प्रस्तावित वैचारिक मॉडल का मूल्यांकन करने के लिए किया गया। द्विमार्गीय ANOVA का उपयोग घटकों पर जनसांख्यिकीय प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए किया गया। क्रोनबैच अल्फा (>0.70) और कंपोजिट विश्वसनीयता (>0.70) का उपयोग आंतरिक संगति की जांच के लिए किया गया। अभिसरण और विभेदकारी वैधता को AVE और MSV के माध्यम से परीक्षण किया गया।

5. परिणाम

तालिका 1: नमूने की जनसांख्यिकीय विशेषताएं (n=398)

विशेषता	संख्या	प्रतिशत
आयु समूह (25-35 वर्ष)	184	46.2%
आयु समूह (35-45 वर्ष)	143	35.9%
लिंग (पुरुष)	213	53.5%
लिंग (महिला)	185	46.5%
शिक्षा (प्राथमिक)	108	27.1%
शिक्षा (उच्च विद्यालय)	139	34.9%
वैवाहिक स्थिति (विवाहित)	343	86.2%
व्यवसाय (किसान)	97	24.4%
व्यवसाय (दैनिक मजदूर)	84	21.1%

अध्ययन के नमूने में अधिकांश ग्रामीण परिवार (46.2%) 25-35 वर्ष की आयु समूह में थे। लिंग वितरण में 53.5% पुरुष और 46.5% महिलाएं शामिल थीं। शिक्षा स्तर में 27.1% के पास केवल प्राथमिक शिक्षा थी, जबकि 34.9% के पास उच्च विद्यालय की शिक्षा थी। नमूने का 86.2% विवाहित था, और व्यावसायिक रूप से, किसान (24.4%) और दैनिक मजदूर (21.1%) सबसे बड़े समूह थे, जो ग्रामीण जनसंख्या की कम कौशल वाली प्रकृति को दर्शाता है।

तालिका 2: मासिक आय और बचत पैटर्न

श्रेणी	संख्या	प्रतिशत
मासिक आय <10,000 रुपये	71	17.8%
मासिक आय 10,000-20,000 रुपये	160	40.2%
मासिक आय >20,000 रुपये	167	42.0%
बचत <2,500 रुपये	127	31.9%
बचत 2,500-5,000 रुपये	127	31.9%
बचत >5,000 रुपये	144	36.2%

अध्ययन नमूने में 17.8% परिवारों की मासिक आय ₹10,000 से कम है, जबकि 40.2% की आय ₹10,000-20,000 और 42.0% की आय ₹20,000 से अधिक है। इससे पता चलता है कि अधिकांश ग्रामीण परिवार मध्यम आय वाले हैं। बचत पैटर्न में, 31.9% परिवार ₹2,500 से कम बचाते हैं, 31.9% ₹2,500-5,000 रुपये बचाते हैं, और 36.2% ₹5,000 से अधिक बचाते हैं। यह दर्शाता है कि वित्तीय समावेशन बढ़ने से बचत प्रवृत्ति में भी वृद्धि होती है।

तालिका 3: वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन का प्रभाव

संबंध	अनुमानित मान	P-मान	परिणाम
वित्तीय साक्षरता → वित्तीय समावेशन	0.258	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
वित्तीय साक्षरता → वित्तीय निर्णय	0.842	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
वित्तीय निर्णय → वित्तीय समावेशन	0.176	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
वित्तीय साक्षरता → वित्तीय व्यवहार	0.735	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
वित्तीय व्यवहार → वित्तीय समावेशन	0.499	***	अत्यंत महत्वपूर्ण

संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग के परिणाम दर्शाते हैं कि वित्तीय साक्षरता का वित्तीय समावेशन पर सीधा सकारात्मक प्रभाव (0.258, $p < 0.001$) है। सबसे मजबूत संबंध वित्तीय साक्षरता और वित्तीय निर्णय निर्माण (0.842) के बीच है, जो दर्शाता है कि बेहतर वित्तीय साक्षरता काफी हद तक बेहतर वित्तीय निर्णय लेने की ओर ले जाती है। वित्तीय निर्णय निर्माण वित्तीय समावेशन को 0.176 मान से प्रभावित करता है। वित्तीय व्यवहार (0.735) और वित्तीय समावेशन (0.499) के बीच संबंध भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

तालिका 4: सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के आयाम

आयाम	अनुमानित मान	P-मान	परिणाम
शिक्षा	0.758	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
वित्तीय	0.813	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
आर्थिक	0.426	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
रोजगार	0.156	0.003	महत्वपूर्ण
स्वास्थ्य	0.150	0.019	महत्वपूर्ण
सामाजिक	0.059	0.356	गैर-महत्वपूर्ण

वित्तीय समावेशन सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर प्रभाव डालता है। शिक्षा आयाम पर सबसे मजबूत प्रभाव (0.758) दिखा, जिसका अर्थ है कि वित्तीय समावेशन बेहतर पढ़ाई और शिक्षा में भागीदारी को सक्षम बनाता है। वित्तीय आयाम (0.813) भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो दर्शाता है कि समावेशन वित्तीय संसाधनों पर बेहतर नियंत्रण प्रदान करता है। आर्थिक (0.426), रोजगार (0.156) और स्वास्थ्य (0.150) सकारात्मक प्रभाव दिखाते हैं। हालांकि, सामाजिक आयाम पर प्रभाव महत्वहीन (0.059, $p > 0.05$) निकला।

तालिका 5: माध्यमकारी प्रभाव विश्लेषण

प्रभाव	अनुमानित मान	P-मान	परिणाम
कुल प्रभाव	0.773	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
प्रत्यक्ष प्रभाव	0.480	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
अप्रत्यक्ष प्रभाव (निर्णय)	0.293	***	अत्यंत महत्वपूर्ण
अप्रत्यक्ष प्रभाव (व्यवहार)	0.406	***	अत्यंत महत्वपूर्ण

माध्यमकारी विश्लेषण के परिणाम दर्शाते हैं कि वित्तीय साक्षरता से वित्तीय समावेशन तक का कुल प्रभाव 0.773 है। इसमें से 0.480 प्रत्यक्ष प्रभाव है, जबकि 0.293 वित्तीय निर्णय निर्माण के माध्यम से अप्रत्यक्ष प्रभाव है। वित्तीय प्रबंधन व्यवहार के माध्यम से अप्रत्यक्ष प्रभाव (0.406) निर्णय निर्माण (0.293) से अधिक है, जो दर्शाता है कि व्यवहार परिवर्तन वित्तीय समावेशन में एक बड़ी भूमिका निभाता है।

6. विचार-विमर्श

इस अध्ययन के परिणाम उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के बीच गहरे संबंध को प्रकट करते हैं। पनकाजे और अन्य (2023) के पिछले अध्ययन के समान, यह अध्ययन भी दर्शाता है कि वित्तीय साक्षरता वित्तीय समावेशन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। डेमिरगुच-कुंट और क्लैपर (2013) ने 148 देशों में आय भिन्नता का अध्ययन किया था; समान रूप से, इस अध्ययन में शिक्षा और व्यवसाय के आधार पर ग्रामीण ग्राहकों की वित्तीय साक्षरता पर सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण प्रभाव पाया गया। एलन और अन्य (2015) के शोध के अनुरूप, जिन्होंने 123 देशों के डेटा का विश्लेषण किया, यह अध्ययन भी दर्शाता है कि आय और शिक्षा स्तर बैंक खातों के स्वामित्व के महत्वपूर्ण भविष्यकहने हैं। नंदु और अन्य (2021) के अध्ययन में पाया गया कि यदि ग्रामीण परिवार, विशेषकर किसान, बैंकिंग सेवाओं और उत्पादों तक पहुंच रखते हैं, तो वे कृषि उत्पादकता में वृद्धि के माध्यम से खेत राजस्व को बढ़ा सकते हैं। यह अध्ययन इसी परिकल्पना का समर्थन करता है।

वित्तीय निर्णय निर्माण की माध्यमकारी भूमिका के संबंध में, कोल और अन्य (2009) के अनुसार, वित्तीय साक्षरता वित्तीय निर्णय निर्माण को बढ़ाती है, जो बदले में बचत आदतों और नागरिकों की सामान्य कल्याण को बढ़ाती है। इसी तरह, ओकेलो और अन्य (2020) के शोध में कहा गया है कि वित्तीय साक्षरता गरीबों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके जीवन पर बड़े प्रभाव डालने वाले वित्तीय निर्णय लेने में उन्हें कठिनाई होती है। इस अध्ययन में पाया गया कि वित्तीय निर्णय निर्माण (0.176, $p < 0.001$) और वित्तीय प्रबंधन व्यवहार (0.499, $p < 0.001$) दोनों ही वित्तीय समावेशन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वित्तीय प्रबंधन व्यवहार की माध्यमकारी भूमिका के संदर्भ में, जेरा और अन्य (2021), पोर्टोकी और सिएरपिल-वोलन (2019) तथा जियाओ और अन्य (2014) के अध्ययन में वित्तीय व्यवहार को वित्तीय क्षमताओं के प्रमुख उत्प्रेरक के रूप में माना गया। इस अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि वित्तीय प्रबंधन व्यवहार (0.406) वित्तीय निर्णय निर्माण (0.293) की तुलना में वित्तीय समावेशन में अधिक मजबूत अप्रत्यक्ष प्रभाव डालता है।

सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर वित्तीय समावेशन के प्रभाव के बारे में, ब्लांको (2013) ने 1961 से 2010 तक 16 देशों के डेटा का उपयोग करके वित्तीय समावेशन के आर्थिक विकास पर प्रभाव को प्रदर्शित किया। इसी तरह, इस अध्ययन में शिक्षा (0.758), वित्तीय (0.813) और आर्थिक (0.426) आयामों पर सर्वोत्तम प्रभाव पाया गया, जो दर्शाता है कि वित्तीय समावेशन शिक्षा तक पहुंच और वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण को सक्षम बनाता है। चर्चिल और मारिसेटी (2020), कबाकोवा और प्लाक्सेंकोव (2018) तथा नंदु और अन्य (2021) के अध्ययन दर्शाते हैं कि वित्तीय साक्षरता वित्तीय सेवाओं और उत्पादों के उपयोग की समझ को बढ़ाती है, जो बदले में घर के कल्याण और आर्थिक वृद्धि को सकारात्मक रूप से प्रभावित करती है। यह अध्ययन इन निष्कर्षों के अनुरूप है और सुझाव देता है कि वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देना ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक है।

7. निष्कर्ष

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल क्षेत्र में वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन और सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण के बीच संबंध को समझने का एक व्यापक प्रयास है। परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि वित्तीय साक्षरता का वित्तीय समावेशन पर सीधा सकारात्मक प्रभाव (0.258, $p < 0.001$) है। इसके अलावा, वित्तीय निर्णय निर्माण और वित्तीय प्रबंधन व्यवहार दोनों ही इस संबंध में महत्वपूर्ण माध्यमकारी भूमिका निभाते हैं, जिसमें व्यवहार परिवर्तन (0.406) निर्णय निर्माण (0.293) की तुलना में अधिक शक्तिशाली प्रभाव दिखाता है। वित्तीय समावेशन सामाजिक-

आर्थिक सशक्तिकरण के अधिकांश आयामों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, विशेषकर शिक्षा (0.758) और वित्तीय (0.813) आयाम। इससे पता चलता है कि जब ग्रामीण परिवारों को औपचारिक वित्तीय प्रणाली तक पहुंच मिलती है, तो वे शिक्षा में निवेश करने और अपने वित्तीय संसाधनों पर बेहतर नियंत्रण रखने में सक्षम होते हैं।

इस अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर, यह सुझाव दिया जाता है कि:

1. **वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों में निवेश:** भारत सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए पर्याप्त संसाधन आवंटित करने चाहिए। यह वित्तीय समावेशन को काफी हद तक सुविधाजनक बना सकता है।
2. **डिजिटल वित्तीय सेवाओं का विकास:** डिजिटल वित्तीय सेवाओं, जैसे मोबाइल बैंकिंग और डिजिटल भुगतान प्रणालियों को ग्रामीण क्षेत्रों में विस्तारित किया जाना चाहिए। ये सेवाएं ग्रामीण लोगों को कहीं भी वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने में सक्षम बना सकती हैं।
3. **स्थानीय संदर्भ में शिक्षा:** वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों को स्थानीय ग्रामीण संदर्भ में डिज़ाइन किया जाना चाहिए, जो कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था, मौसमी आय और ग्रामीण जीवन की विशिष्ट चुनौतियों को संबोधित करते हैं।

यह अध्ययन यह भी प्रदर्शित करता है कि ग्रामीण विकास के लिए एक समग्र दृष्टिकोण आवश्यक है जहां वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन और सामाजिक-आर्थिक विकास को एक साथ बढ़ावा दिया जाता है। केवल बैंकिंग सेवाओं तक पहुंच पर्याप्त नहीं है; लोगों को उन सेवाओं का उपयोग करने और उनसे लाभान्वित होने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल भी होना चाहिए।

संदर्भ सूची

- [1]. अदुडा, जे., और कलुंडा, ई. (2012). वित्तीय समावेशन और वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता केन्या के संदर्भ में। साहित्य की समीक्षा, 2(6), 95-120।
- [2]. अकाप्पो, ए. ए. (2022). संज्ञानात्मक वित्त और वित्त: घाना स्टॉक मार्केट में वित्तीय साक्षरता, वित्तीय समावेशन और व्यक्तिगत भागीदारी। संज्ञानात्मक अर्थशास्त्र और वित्त, 2023955।
- [3]. अरोड़ा, ए. (2016). कार्यरत भारतीय महिलाओं में वित्तीय साक्षरता का आकलन। बिजनेस विश्लेषक, 36(2), 219-237।
- [4]. बेक, टी., डेमिरगुच-कुंट, ए., और लेविन, आर. (2007). वित्त, असमानता और गरीब। आर्थिक विकास का जर्नल, 12(1), 27-49।
- [5]. ब्लांको, एल. (2013). लैटिन अमेरिका में वित्त, वृद्धि और संस्थान: लिंक क्या हैं? अर्थशास्त्र का लैटिन अमेरिकी जर्नल, 50(2), 179-208।
- [6]. बोंगोमिन, जी. ओ. सी., नताई, जे. एम., और मुनेन, जे. (2016). उप-सहारा अफ्रीका में गरीब परिवारों के वित्तीय समावेशन के लिए संस्थागत ढांचे। सामाजिक अर्थशास्त्र का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 43(11), 1096-1114।
- [7]. चर्चिल, एस. ए., और मारिसेटी, वी. बी. (2020). वित्तीय समावेशन और गरीबी: पैतालीस हजार घरों की कहानी। अनुप्रयुक्त अर्थशास्त्र, 52, 1777-1788।
- [8]. कोहेन, एम., और नेल्सन, सी. (2011). ग्राहकों को वित्तीय समावेशन की ओर ले जाने में एक कदम वित्तीय साक्षरता है। वैश्विक माइक्रोक्रेडिट शिखर सम्मेलन, 14(17), 1-34।
- [9]. कोल, एस., सैम्पसन, टी., और ज़िया, बी. (2009). वित्तीय साक्षरता, वित्तीय निर्णय और वित्तीय सेवाओं की मांग: भारत और इंडोनेशिया से सबूत। कार्यपत्र 09-117।
- [10]. कुक, ई., हेग, एस., और मैके, ए. (2016). घाना गरीबी और असमानता रिपोर्ट: छठे घाना जीवन मानदंड सर्वेक्षण का उपयोग।
- [11]. डेमिरगुच-कुंट, ए., और क्लैपर, एल. (2013). वित्तीय समावेशन को मापना: देशों के बीच और भीतर वित्तीय सेवाओं के उपयोग में भिन्नता की व्याख्या। ब्रुकिंग्स आर्थिक गतिविधि पर कागज़ात, 279-340।
- [12]. डेमिरगुच-कुंट, ए., और अन्य (2020). वैश्विक फाइंडेक्स डेटाबेस 2017: वित्तीय समावेशन को मापना और वित्तीय सेवाओं तक पहुंच का विस्तार करने की अवसर।
- [13]. गैसीना, एस., और कैदारोवा, एल. (2017). कजाखस्तान में ग्रामीण जनसंख्या के बचत व्यवहार के निर्धारक के रूप में वित्तीय साक्षरता। ग्रामीण स्थिरता अनुसंधान, 38(333), 32-42।
- [14]. गोलैंड, टी., बेज़, जे., और चैया, जे. (2010). लाखों से अरबों: संपूर्ण वित्तीय समावेशन प्राप्त करना। मैकिंजी और कंपनी।

- [15]. जकारिया, जेड., और अन्य (2016). सार्वजनिक विश्वविद्यालयों में कर्मचारियों के बीच जीवन बीमा खरीद करने का इरादा: पाकिस्तान का एक केस अध्ययन। अर्थशास्त्र और वित्त कार्यविधि, 37(16), 358–365।
- [16]. जियाओ, जे. जे., और जियाओ, जे. जे. (2008). पारिवारिक वित्त अनुसंधान की पुस्तिका में वित्तीय व्यवहार के लिए व्यवहार सिद्धांत लागू करना। स्प्रिंगर लिंक।
- [17]. लुसार्डी, ए., और मिचेल, ओ. एस. (2011). वैश्विक वित्तीय साक्षरता: एक अवलोकन। पेंशन अर्थशास्त्र और वित्त का जर्नल, 10(4), 497–508।
- [18]. लुसार्डी, ए., और मिचेल, ओ. एस. (2014). वित्तीय साक्षरता का आर्थिक महत्व: सिद्धांत और साक्ष्य। आर्थिक साहित्य का जर्नल, 52(1), 544।
- [19]. नंदु, पी., चेंद्रागिरी, एम., और वेलायुथम, ए. (2021). भारत से सीमांत सड़क विक्रेताओं के वित्तीय कल्याण पर वित्तीय समावेशन के प्रभाव की जांच।
- [20]. नुयेन, टी. टी. एच. (2021). विकासशील देशों के लिए एक समग्र वित्तीय समावेशन सूचकांक का निर्माण। अर्थशास्त्र और विकास का जर्नल, 23(1), 77–99।
- [21]. ओकेलो, जी. (2020). वित्तीय मध्यस्थों की भूमिका वित्तीय साक्षरता और वित्तीय समावेशन में विकासशील देशों में गरीबों को बढ़ावा देने में।
- [22]. पनकाजे, एन., राहिमान, एच. यू., पार्विन, एस. एम. आर., कुलाल, ए., और सिद्दीक, ए. (2023). ग्रामीण भारत में सामाजिक-आर्थिक सशक्तिकरण: क्या वित्तीय समावेशन और साक्षरता महत्वपूर्ण हैं? संज्ञानात्मक सामाजिक विज्ञान, 9(1), 2225829।
- [23]. पोर्टोकी, टी., और सिएरपिल-बोलन, एम. (2019). पोलैंड के ग्रामीण क्षेत्रों में निम्न आय उपभोक्ताओं की वित्तीय क्षमता को आकार देने वाले कारक। उपभोक्ता अध्ययन का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 43(2), 187–198।
- [24]. रेमंड, डी. एल. (2010). वित्तीय साक्षरता स्पष्ट: क्रमवर्धी जटिल अर्थव्यवस्था में स्पष्टीकरण के लिए मामला। उपभोक्ता मामलों का जर्नल, 44(1), 276–295।
- [25]. सरमा, एम., और पैस, जे. (2008). वित्तीय समावेशन और विकास। मानव विकास और क्षमता संगठन की वार्षिक सम्मेलन, नई दिल्ली।
- [26]. सेराओ, एम. वी., और सिकेरा, ए. एच. (2012). वित्तीय समावेशन की पहुंच और प्रभाव की जांच करने के लिए एक पद्धति डिज़ाइन करना।
- [27]. तुमासी, एम. ए., जिआंग, वाई., डंकुह, एफ. ओ., चांदियो, ए. ए., और असियामा, बी. के. (2020). घाना में सीमांत मत्स्य पालकों के ऋण बाध्यता के निर्धारक।
- [28]. विरा, ई. एफ. एस. (2012). हम वित्तीय साक्षरता के बारे में क्या जानते हैं? साहित्य समीक्षा। मरमरा यूरोपीय अध्ययन का जर्नल, 20(2), 23–38।
- [29]. विश्व बैंक। (2018). यूएफए 2020 अवलोकन: 2020 तक सार्वभौमिक वित्तीय पहुंच।
- [30]. जेरा, जी., लिनवती, एन., और अन्य (2021). विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच वित्तीय साक्षरता मॉडल का विकास।

Cite this Article:

जागृति सिंह & डॉ० अमित कुमार राहुल (2026). उत्तर प्रदेश के ग्रामीण विकास में वित्तीय समावेशन की प्रभावशीलता : पूर्वांचल क्षेत्र का शोधात्मक अध्ययन. *International Journal of Emerging Research in Arts, Science and Technology*, 1(2), 20–26.

Journal URL: <https://ijerast.com/>

DOI: <https://doi.org/10.67715/ijerast.v1i2.9>

Disclaimer/Publisher's Note: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.